आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015-2017

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : चौदहवां | अंक : बारहवां | अप्रैल – 2017

5	अपने मन पर विजय प्राप्त करें
9	नाम ही सब कुछ है
19	सवाल-जवाब
32	दलदल

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 (राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक-नन्दनी

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

सहयोग-परमजीत सिंह

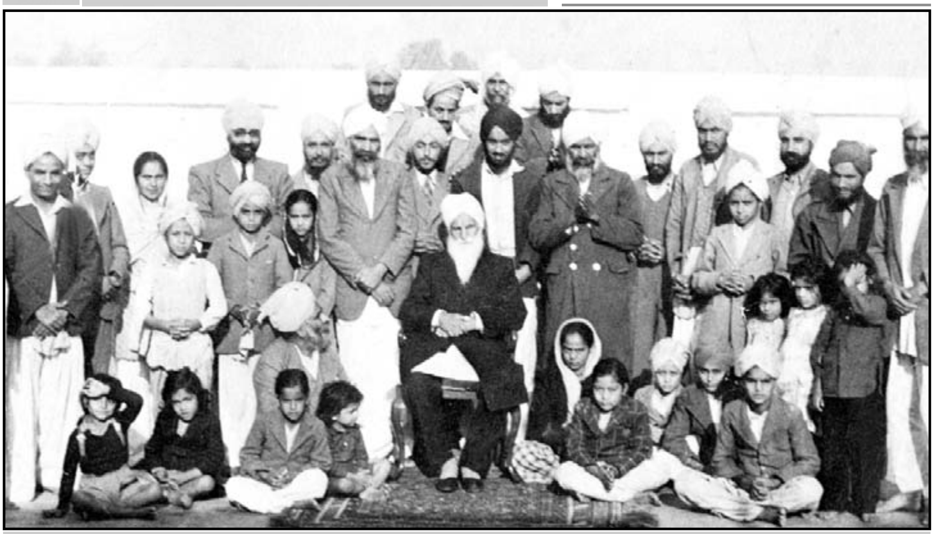

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com	Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अप्रैल 2017 -181- मूल्य – पाँच रुपये

सावन गुमदा-गुमदा गुम होया

1. सावन गुमदा–गुमदा, गुम होया,
चंगा साऊ ओह जीव करतार दा सी, (2)

2. मुसलमान इसाईयां ते, हिन्दुआं नूं
नाले सिक्खां नूं वी सतकार दा सी, (2)

3. हर घड़ी सरबत दा, भला मंगदा
कदे किसे नूं वी ना ही मार दा सी, (2)

4. नक्श नैण सोहणे अते, उम्र वड्डी,
'अजायब' उस नूं सावन, पुकार दा सी, (2)

बाबा सावन सिंह जी महाराज द्वारा एक प्रेमी सतसंगन को लिखा पत्र

अपने मन पर विजय प्राप्त करें

मेरी प्यारी बेटी,

तुम्हारा प्यार और श्रद्धा भरा खत मिला। नए मकान में स्थानांतरण करने की वजह से तुम्हारे भजन–अभ्यास पर असर पड़ा, इसके बावजूद तुम अंदर अच्छी प्रगति कर रही हो यह जानकर बड़ी खुशी हुई। तुम्हें परमपिता परमात्मा की दया से आरामदायक घर मिल गया है और तुम्हारी दुनियावी चिन्ता खत्म हो गई है। अब तुम्हे परमपिता परमात्मा की उपासना में जी–जान से जुड़ जाना चाहिए। अपने कारोबार में से जितना समय आसानी से निकाल सको उतना समय भजन–अभ्यास के लिए देना चाहिए लेकिन ख्याल रहे कि तुम्हारे कारोबार पर इसका असर न पड़े।

इस दुनिया के सारे ऐशो–आराम स्वयं दुनिया सूरज, चाँद, सितारे जो कुछ भी हम देख रहे हैं ये सब नाशवान हैं, सिर्फ आत्मा अमर है। यह छोटी सी जिंदगी इस तरीके से जिओ जिससे परमात्मा खुश हो जाए। तुम्हारा इस दुनिया में आवागमन खत्म हो जाए और तुम्हे तुम्हारा अविनाशी घर सच्चखंड मिल जाए जहाँ सिर्फ निर्मल आनन्द है।

अभ्यास में बैठने के बारे में तुमने लिखा है कि तुम एक ही आसन में ज्यादा देर नहीं बैठ सकती तो तकिए का इस्तेमाल करने में कोई हर्ज नहीं। तुम सस्मास से कहकर अपने लिए एक बैरागन बनवा लो। बैरागन एक तरह का लकड़ी का सीधा टुकड़ा होता है जिसमें एक और छोटा लकड़ी का टुकड़ा जोड़ा जाता है तो टी आकर की बैरागन बन जाती है। इसकी लंबाई में डेढ़ फुट और चौड़ाई में दो इंच का लकड़ी का टुकड़ा इस्तेमाल होता है और उसके ऊपर की चोटी पर बीचो–बीच छोटी लकड़ी का टुकड़ा जोड़ा जाता है, जिससे दोनों कुहनियों को अभ्यास करते समय आधार मिलता है।

हम अपना ज्यादातर समय दुनियावी बातों में बिताते हैं और ध्यान में कुछ ही घंटे बिताते हैं। हमारी आत्मा उस पवित्र शब्द की आवाज का रस ठीक से नहीं ले पाती। हमारा मन बार–बार बाहर जाता है और दुनियावी चीजों के बारे में सोचता रहता है इसलिए सारे दिन के कामकाज पर तीक्ष्ण नजर रखें और ध्यान रखें कि मन तुम्हें दुनियावी चीजों में न बहा ले जाए।

दुनियावी इच्छाओं को रोकने की कोशिश करें और बाहर की तरफ ले जाने वाली इन्द्रियों पर नियंत्रण रखें। हमेशा अपना ध्यान केंद्रित करें और अपने मन को फालतू कल्पनाओं में न फँसने दें, यह तभी संभव होगा जब आप अपने मन को शब्द–नाम के साथ जोड़े रखेंगी। हर समय चलते–फिरते, खाते–पीते या कोई भी ऐसा काम करते समय जिसमें खास ध्यान देने की जरूरत नहीं होती उस समय पवित्र नाम जपने में अपना ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करें। हमेशा सतर्क रहें अपने ध्यान को इधर–उधर न भटकने दें मन पर काबू पाने का यही एक तरीका है।

किसी इंसान या किसी चीज के जरिए तुम्हारे लिए जो भी अच्छा या बुरा होता है वह हमारे प्यारे परमपिता की तरफ से होता है। सारे इंसान और सारी चीजें उस परमात्मा के कार्य के साधन हैं अगर तुम्हारे साथ कोई बुरी घटना घटती है तो तुम यह सोचो कि यह परमात्मा की सबसे बड़ी दया है।

हमें पिछले कर्मों का भुगतान तो करना ही पड़ता है, अभी करें या बाद में करें। हमारे सतगुरु भविष्य में होने वाले दुख और कष्ट शीघ्रता से भुगतवाना चाहते हैं और जल्दी हमारे कर्मों का बोझ हल्का करना चाहते हैं; यह तो कर्मों का कर्ज है। अगर हमने एक टन जितना भुगतान करना हो तो अब हमें एक पौन्ड जितना भुगतान करके छुटकारा मिल जाता है।

अगर तुम्हें सख्त कर्मों का भुगतान करना पड़े तो जी छोटा न करना यह तुम्हारे अच्छे के लिए ही होता है। अगर कोई आदमी आपकी गलती न

होने पर भी आपके साथ बुरा सुलूक करता है तो आप उस बुरे सुलूक के पीछे सतगुरु का हाथ समझें। सतगुरु देखना चाहते हैं कि आपका अहंकार खत्म हो गया है या नहीं? वे देखना चाहते हैं कि आपके अंदर नम्रता और प्यार की जड़ें कितनी गहरी और मजबूत हैं।

सोचकर देखें! अगर इंसान अपना बेटा खो देता है ऐसा परखने के लिए होता है कि आपके दुनियावी रिश्तों का प्यार कम हुआ या नहीं? परमपिता हमें उन भारी जंजीरों से छुड़वाना चाहते हैं जो जंजीरें हमें दुनिया में जकड़कर रखती हैं। दुनियावी रिश्तेदारों से ज्यादा प्यार होने का मतलब है सतगुरु से कम प्यार।

वे सारी घटनाएं जो दुर्भाग्यपूर्ण दिखाई देती हैं वे असल में वैसी नहीं होती। वे हमें शुद्ध करने के लिए, हमारे कर्मों का बोझ हल्का करने के लिए होती हैं हमारी प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाती हैं और हमें बेहतर इंसान बनाती हैं। हमेशा ईश्वर की इच्छा के आधीन रहें, उसकी रज़ा में संतोष मानें। परमपिता परमात्मा जो करते हैं अच्छे के लिए ही करते हैं।

इस दुनिया में जो लोग अंदरूनी तरक्की करने में जुड़े हैं उन्हें सदा मन और विषय के दो ताकतवर शत्रुओं के आक्रमण का सामना करना पड़ता है। ये हमारे मार्ग में अनेक रूकावटें पैदा करने की कोशिश करते हैं। अगर कोई प्रतिकूल या बुरी घटना घटती है तो हमें निराश नहीं होना चाहिए बल्कि हमें दोगुने प्रेम से उभरना चाहिए अन्त में जीत हमारी होगी।

हमारे परमपिता प्यार हैं और हम उस प्यार के सागर की बूँदे हैं। इस विशाल संसार की यंत्रणा निरंतर प्यार के तत्व पर आधारित है इसलिए तुम प्यार के तत्व के अनुरूप होने का प्रयत्न करो। तुम्हारे अंदर सतगुरु का प्यार जितना गहरा होगा उतना ही दुनिया के साथ प्यार कम और फीका रहेगा। सतगुरु का प्यार दुनियावी प्यार की जगह ले लेगा फिर आत्मा शरीर से

निकलने लगेगी। एक–एक करके अंदरूनी परदे खुलने लगेंगे। संसार का गूढ़ रहस्य खुल जाएगा और तुम अपने आपको प्यारे परमपिता परमात्मा की गोद में पाओगी उनसे एकरूप हो जाओगी।

परमपिता परमात्मा ने अपनी दया करके तुम्हें यह पवित्र दात दी है। इस दात की तुलना दुनिया के किसी भी खजाने के साथ नहीं हो सकती। अगर तुम भजन–अभ्यास नहीं करोगी तो तुम्हारी अंदरूनी प्रगति नहीं होगी। आदमी की भूख सिर्फ सामने पड़े विभिन्न पदार्थों को गिनने से नहीं मिटती। तुमने जो शिक्षा प्राप्त की है वह शिक्षा अनमोल है। इसका फायदा तब तक नहीं होगा जब तक तुम इसके अनुसार नहीं चलोगी, इस पर अमल नहीं करोगी। रोजाना अपने दुनियावी कामकाज से जितना ज्यादा समय भजन–अभ्यास के लिए निकाल सकती हो अवश्य निकालो।

सारांश में तुम्हें निम्नलिखित बातों का ख्याल रखना चाहिए:

1. मन के ऊपर काबू
2. विषय–विकारों से परहेज
3. परमात्मा की रज़ा को मानना
4. सतगुरु से प्यार
5. नित्यनियम से भजन–अभ्यास

तुम्हें ऐसे पत्र अपने मार्गदर्शन के लिए संभालकर रखने चाहिए और इन्हें नष्ट नहीं करना चाहिए।

तुम्हारा प्यारा

सावन सिंह

1 अगस्त 1912

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाम ही सब कुछ है

गुरु रामदास जी की बानी

DVD-550

रिबोला, इटली

मेरा सतगुरु प्रीतम प्यारा मैं भुल गई नाम तुम्हारा।

हाँ भई गौर से सुनें! आपके आगे गुरु रामदास जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है। सन्त–महात्माओं की बानियाँ समझने के काबिल होती है। बचपन में ही गुरु रामदास जी के माता–पिता संसार छोड़ गए थे। आप बहुत सत्यवादी थे। आपने बचपन में ही घुमड़ियां (उबले हुए चने) बेचकर अपनी परवरिश का इंतजाम किया। आपको गुरु अमरदेव जी की लड़की बीबी भानी के साथ शादी करवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हिन्दुस्तान में आज भी दहेज का रिवाज है और पहले भी था। जब आपकी शादी की रस्म हुई तब गुरु अमरदेव जी महाराज ने रामदास जी से कहा, ''हमारे भल्लों की कौम में यह रीति है कि लड़की को दहेज दिया जाता है। तू माँग जो माँगेगा तुझे वह देकर खुश किया जाएगा।'' रामदास जी एक पवित्र आत्मा थे। आपने कहा, ''मैं दुनिया का कोई सामान नहीं माँगता अगर आप मुझ पर मेहरबान हैं तो आप मुझे नामदान दें। **नाम ही सब कुछ है** नाम से बढ़कर दुनिया में और कोई चीज नहीं।'' गुरु अमरदेव जी ने खुश होकर आपको नाम का दान दे दिया।

रामदास जी सच्चे सुच्चे थे आपके ऊपर नाम का बहुत असर हुआ। आपने बहुत कड़ी मेहनत से सेवा की। रामदास जी ने अमरदेव जी महाराज को अपना ससुर नहीं कुलमालिक समझा।

अमरदेव जी ने जो कहा आपने वह किया। उस समय पानी की बहुत दिक्कत थी। जिस समय अमरदेव जी बावड़ी लगा रहे थे उस समय आपने बहुत सख्त सेवा की। आपकी धर्मपत्नी बीबी भानी ने भी सिर के ऊपर टोकरियां उठाई।

आप लंगर के मुखिया थे, आप लंगर में बहुत सेवा करते थे। गुरु अमरदेव जी ने खुश होकर आपको संगत की अगुवाई करने का सौभाग्य भी दे दिया; आप बहुत शान्ति वाले थे।

गुरु नानकदेव जी के साहबजादे श्रीचंद आपसे सदा ही विरोध रखते थे। एक बार श्रीचंद ने आपके पास आकर कहा, ''पुरखा! इतनी लम्बी दाढ़ी क्यों बढ़ाई है?'' आप नम्रता के पुंज थे। आप अपनी दाढ़ी से श्रीचंद के चरण झाड़कर कहने लगे, ''यह दाढ़ी आप जैसे महापुरुषों के चरण झाड़ने के लिए बढ़ाई है।'' गुरु नानकदेव जी के साहबजादे श्रीचंद की आँखों से पानी आ गया और उसने कहा, ''हमारे अंदर यह नम्रता नहीं थी इसी नम्रता की वजह से आपने हमारे घर से वस्तु प्राप्त की है।''

बहुत से योगियों, सन्यासियों और उदासियों ने आपसे नाम प्राप्त करके अपना जीवन बनाया। सब मुल्कों के सामाजिक धर्मगुरु इससे सहमत हैं कि **नाम ही सब कुछ है,** मुक्ति नाम में है लेकिन यह पता नहीं कि वह नाम लफ्ज़ है या कोई ताकत है? मुख्तलिफ मुल्कों और समाजों में लोग अपनी–अपनी बोली में परमात्मा के गुण गाते रहे, नाम का भेद देते रहे हैं।

महात्मा दो प्रकार का नाम बताते हैं कि एक वर्णात्मक नाम है और दूसरा धुनात्मक नाम है। जो लिखने–पढ़ने और बोलने में

आए वह वर्णात्मक नाम है। जो लिखने–पढ़ने और बोलने में न आए वह धुनात्मक नाम है। महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि वर्णात्मक नाम जरिया हैं और धुनात्मक नाम मंजिल है। अनेकों महात्माओं ने वर्णात्मक नाम बयान किए और अनेकों महात्माओं ने आना है। वे भी अपनी–अपनी बोली में वर्णात्मक नामों को बयान करेंगे लेकिन धुनात्मक नाम जीवित महापुरुष ही दे सकता है।

उस नाम को किसी महात्मा ने वर्ड या लोगास कह दिया। किसी ने गुरबानी कह दिया। किसी ने हरि कीर्तन कह दिया। मुसलमान उस पवित्र नाम की महिमा कलाम, कलामें इलाही, कलमा कहकर बयान करते हैं। वेदों में राम–नाम, राम–धुन, दिव्य–धुनि या आकाशवाणी कहकर बयान किया है कि वह बानी आकाश से आ रही है। किसी महात्मा ने उसे रब्बे–राग कहकर भी बयान किया है।

कुदरती तौर पर दिल में सवाल उठता है कि कोई भी लफ्ज़ दुनिया की रचना पैदा नहीं कर सकता, खंड–ब्रह्मांड नहीं बना सकता, कोई इसे चला नहीं सकता क्योंकि किसी भी लफ्ज़ में यह ताकत नहीं। वह ताकत नाम है। नाम किसी भी जुबान में बोला नहीं जाता, लिखा नहीं जाता। गुरु अंगददेव जी कहते हैं:

अक्खां बाजो बोलना बिन कन्ना सुनना।
पैरां बाजो चलना बिन हत्थां करना।।
जीभां बाजों बोलना एयों जीवत मरना।
नानक हुक्म पछाण के त्यों खसमें मिलना।।

जिस नाम ने दुनिया की रचना पैदा की है उसे हम बाहर की आँखों से नहीं देख सकते इस जुबान से बयान नहीं कर सकते।

नाम बिना लिखा कानून, बिना बोली भाषा है। बुद्धि या दलीलबाजी से हम इसे समझ नहीं सकते, बुद्धि हमें वहाँ लेकर पहुँच नहीं सकती। कई बार हम अपनी बुद्धि से दुनियावी मसले भी हल नहीं कर सकते। कई बार हम सोचते हैं! हमारी समझ में नहीं आ रहा कि हमने यह मसला किस तरह हल करना है? बचपन में बुद्धि और होती है जवानी में बुद्धि और होती है, बुढ़ापे में आकर बुद्धि और हो जाती है। जिस पैमाने की चीज घटती–बढ़ती रहे वह कैसे तोली जा सकती है, कैसे सही हो सकती है?

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''मन–बुद्धि दोनों अज्ञानी हैं जहाँ मन–बुद्धि की पहुँच खत्म हो जाती है वहीं से रूहानियत शुरू होती है। जब तक हमारा अनुभव नहीं खुलता तब तक जिन महात्माओं का अनुभव खुला है उनकी लेखनियों पर भरोसा करके ही हम फायदा उठा सकते हैं।''

हम महात्मा के कहे मुताबिक प्रेम, भरोसे और सच्चे दिल से अभ्यास करते हैं तो रोज–रोज अभ्यास करने से महारत पैदा हो जाती है। हमारा अनुभव खुल जाता है फिर दलील बाजी और तर्क की जगह प्यार पैदा हो जाता है, गुरु के ऊपर सच्चा भरोसा आ जाता है। पल्टू साहब कहते हैं:

नाम नाम सब कहत है नाम न पाया कोय।
नाम न पाया कोए नाम की गत है न्यारी।
जे कोई चाहे नाम ते नाम अनाम है।
पढ़न लिखन में नाहीं नेह अक्षर काम है।
रूप कहो अनुरूप पवन अनिरेख ते।
हां रे पल्टू गैर दृष्टि ते सन्त नाम वो देखते।।

जब अंदर की आँख खुलती है वह आँख नाम को देखती है। अंदर आत्मा नाम के रस को चखती है। नाम की दौलत साधु, सन्त–महात्माओं से मिलती है। हमारा जानी दुश्मन मन हमारे अंदर ही बैठा है वह हमें इस दौलत की तरफ आने ही नहीं देता, अजीब अभ्यासों में फँसा देता है। हम कभी जप–तप करते हैं कभी पूजा–पाठ करते हैं कभी तीर्थों पर जाकर स्नान करने में और कभी दान–पुण्य करने में ही मुक्ति समझने लग जाते हैं। उत्साही लोग यज्ञ या पढ़–पढ़ाई में ही मुक्ति समझते हैं। पढ़े–लिखे लोग विद्या की भूल–भुलैया में ही फिरते रहते हैं लेकिन असली नुक्ते को भुला देते हैं।

गुरु रामदास जी ने अपने गुरु से नाम की ऊँची दौलत मांगी, दुनिया का कोई सामान नहीं मांगा। नाम प्राप्त करने से पहले सोचने की बात है कि हमने नाम दुनिया की मान–बड़ाई या धन–दौलत प्राप्त करने के लिए नहीं जपना और न ही हमने लोगों को रिद्धियां–सिद्धियां ही दिखानी है। नाम के अभ्यासी को कुदरती तौर पर ही रिद्धियां–सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। रिद्धियां–सिद्धियां अभ्यासी के आगे हाथ जोड़कर खड़ी हो जाती हैं कि हमें भी अंगीकार करें। काल ने सतसंगी को रास्ते में अटकाकर रखने के लिए रिद्धियां–सिद्धियां बनाई हैं।

महाराज सावन सिंह जी सदा ही अपने नामलेवा को खबरदार किया करते थे, ''आप कुदरत के नियमों के मुताबिक जीवन जिएं अगर आपके ऊपर आपका गुरु दया करता है तो आप कोई करामात न दिखाएं। लोगों को करामात दिखाना अपनी कमाई को भंग के भाणे खो देना है।''

नाम मिलै मन त्रिपतीऐ बिन नामैं धृग जीवास।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं, ''तृप्ति नाम में है। शान्ति नाम में है और **नाम ही सब कुछ है**। लोगों ने नाम की तरफ से पीठ की हुई है। इंसानी जामा प्राप्त करके जिन्हें नाम नहीं मिला या जिनके अंदर नाम की ख्वाहिश ही पैदा नहीं हुई उनका दुनिया में आना किसी काम का नहीं, उनका जीना धृग है।''

कोई गुरमुख सज्जण जे मिलै मैं दस्से प्रभ गुणतास।।

आप प्यार से कहते हैं, ''नाम साधुओं की जायदाद है। नाम ने साधुओं के अंदर निवास किया हुआ है। मुझे कोई ऐसा नामरूप भेदी गुरुमुख सज्जन मिल जाए वह मेरे ऊपर दया करके मुझे नाम का रास्ता दे दे, मेरी मदद करे।''

जिनि ऐसा हर नाम न चेतया से काहे जग आए।
ऐह मानस जन्म दुर्लभ है नाम बिन बिरथा सब जाए।
हुण वथ हर नाम न बीजया अग्गे भुखा क्या खाए।
मनमुखां नू फिर जन्म है नानक हर भाए।।

जिन्हां मस्तक धुरो हर लिखया तिन्हां सतगुरु मिलया।
अज्ञान अंधेरा कटया गुरु ज्ञान घट बलया।
हर लद्दा रतन पदार्थ फिर बोहड़ न चलया।
नानक नाम अराधया अराध हर मिलया।।

हौं तिस विट्टों चौखंनीऐ मैं नाम करे परगास।।

आप कहते हैं, ''मैं अपने शरीर के चार टुकड़े करके गुरु पर कुर्बान जाता हूँ। उसने मेरे अंदर अज्ञानता का अंधेरा दूर करके नाम का प्रकाश कर दिया है; नाम की ज्योति जगा दी है।''

मेरे प्रीतमां हौं जीवां नाम ध्याय।।

मैंने पहले बताया था कि जब अनुभव खुल जाता है हम फैले हुए ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र कर लेते हैं तब अंदर प्यार के भाँबड़ उछलने लगते हैं फिर हम गुरु की प्यार भरी मूरत को एक सैकिंड भी अलग नहीं होने देते। हम हजारों शिकायतें करते हैं कोई कहता है कि ख्याल नहीं टिकता, कोई कहता है कि गोडे–गिट्टे दुखते हैं, कोई कहता है कि नींद आती है।

अमली जिए अमल खाए ते हर जन जिए नाम ध्याए।

जिस तरह अमली लोग अमल के सहारे जिंदगी व्यतीत करते हैं अगर वे अमल ने खाएं तो उनका शरीर टूटता है, अभ्यासी की भी ऐसी ही हालत होती है। जिन्होंने नाम को आधार बना लिया है उनकी कोई शिकायत नहीं होती। वे जब मेरे पास आते हैं तो अपने अनुभव या भरपूर होने की ही बात करते हैं।

बिन नावैं जीवण ना थीऐ मेरे सतगुर नाम दृढ़ाए।।
नाम अमोलक रतन है पूरे सतगुर पास।।
सतगुर सेवै लग्गयां कढ रतन देवै परगास।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''नाम अमोलक रतन है। दुनिया के रतन पत्थर हैं, रतन कीमती पत्थर होते हैं। नाम हीरों, रतनों से भी ऊपर है, **नाम ही सब कुछ है**, नाम गुरु के पास है। जो गुरु की सेवा में लग जाते हैं गुरु के कहे अनुसार अपना जीवन ढ़ालते हैं कमाई करते हैं गुरु उनकी सेवा से खुश होकर उनके आगे नाम रूपी रतन रख देता है।''

जो बच्चे टीचर का कहना मानते हैं मेहनत से पढ़ाई करते हैं टीचर भी उनकी तरफ ज्यादा तवज्जो देता है। वह बच्चा

अपनी कक्षा में पहले नम्बर पर आ जाता है। इसी तरह जो सेवक सन्तों के कहने के मुताबिक अपनी जिंदगी को पवित्र करते हैं नाम की कमाई करते हैं सन्तों की उन सेवको की तरफ ज्यादा तवज्जो होती है। सन्तों की कोशिश होती है कि मेरे बच्चे मेरे जीवन काल में ही अपने पैरों पर खड़े हो जाएं।

धंन वडभागी वडभागीआं जो आय मिले गुर पास।।

ऊँचे भाग्य वाले इंसानी जामें में गुरु के पास बैठकर नाम प्राप्त करते हैं, नाम की कमाई करते हैं।

जिनां सतगुर पुरख न भेटयो से भागहीण वस काल।।

आप कहते हैं, ''जिन्हें इंसानी जामा प्राप्त करके पूरे गुरु से नाम नहीं मिला, पूरे गुरु की शरण नहीं मिली; वे काल के बहकावे में आकर काल के जाल में फँस जाते हैं।''

ओय फिर फिर जोन भवाईऐं विच विसटा कर विकराल।।

जिन्हें नाम नहीं मिला उनका दुखों की दुनिया में आना–जाना कभी खत्म नहीं होता, उनका कभी किसी जगह जन्म होता है तो कभी किसी जगह जन्म होता है। काल उन्हें ऐसी सजा देता है कि उन्हें बिष्टा का कीड़ा तक बना देता है। कबीर साहब कहते हैं:

यम का ठेंगा बुरा है ओह नहीं सहा जाए।
एक जो साधु मोहे मिलया तिन्हू लिया बचाए।।

प्रभु ने दया करके हमें इंसान का जामा दिया है अपने मिलने का मौका दिया है लेकिन हम इसे विषय–विकारों में खोकर नर्कों के कीड़े बनने के लिए तैयार हो जाते हैं।

ओनां पास दुआस न भिटीऐ जिन अंतर क्रोध चंडाल।।
सतगुर पुरख अमृतसर वडभागी नावेंह् आय।।

आप कहते हैं, ''कामी, क्रोधी परमात्मा की भक्ति की तरफ नहीं आ सकते, उनके पास बैठने का कोई फायदा नहीं, हमारे ऊपर भी वैसा ही असर हो जाएगा। एक बार उनके पास जाने पर पता नहीं लगता लेकिन दूसरी बार उनके पास न जाएं। सतगुरु और सतगुरु का सतसंग अमृत का सरोवर है। भाग्यशाली जीव उस अमृत के सरोवर में नहाकर निर्मल हो जाते हैं और नाम की कमाई करते हैं।''

उन जनम जनम की मैल उतरै निरमल नाम दृढ़ाय।।
जन नानक उत्तम पद पाया सतगुर की लिव लाय।।

आप कहते हैं, ''वे बड़े ऊँचे भाग्य वाले हैं जो महात्मा के पास जाते हैं, उनके सतसंग सरोवर में स्नान करते हैं। उनके जन्म–जन्मांतरों के पाप खत्म हो जाते हैं, वे निर्मल हो जाते हैं नाम की कमाई के काबिल बन जाते हैं। वे गुरु के साथ लिव लगाकर सच्चखंड चले जाते हैं। उन्हें उत्तम पद सच्चखंड की बख्शिश मिल जाती है।''

परमात्मा एक समुंद्र है सतगुरु उसकी लहर है और आत्मा उसकी बूँद है फर्क विछोड़े का होता है। जब बूँद लहर के साथ मिलाप कर लेती है तो लहर उसे लेकर समुंद्र में ही बैठ जाती है।

गुरु रामदास जी ने हमें इस छोटे से शब्द में नाम के मुत्तलिक काफी समझा दिया है कि तृप्ति और शान्ति नाम में है,

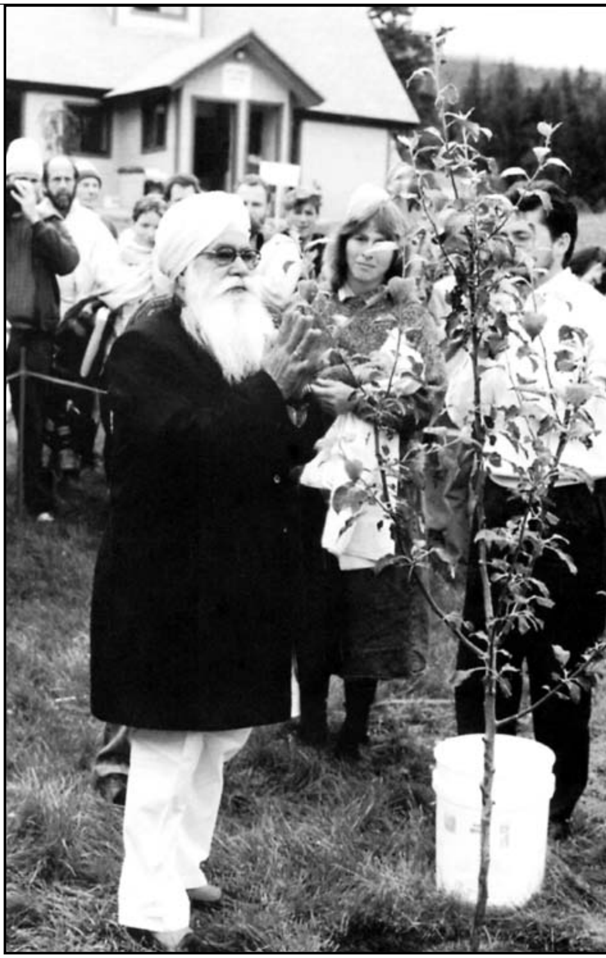

नाम ही सुखों का सोमा है। आज तक किसी को भी धन–दौलत या विषय के भोगों में न सुख मिला है और न मिल ही सकता है।

आप प्यार से कहते हैं कि नाम ही जिंदगी की रोटी और पानी है जो आत्मा की प्यास बुझाता है। वे जीव बड़े भाग्यशाली हैं जो नाम को प्राप्त कर लेते हैं। हमारा फर्ज बनता है कि हम शब्द–नाम की कमाई करें, इस जीवन को पवित्र बनाएं।

***

24 मई 1989

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

एक प्रेमी :– *प्यारे महाराज जी! कभी–कभी इंसानों के शरीर के चारों तरफ अलग–अलग रंग और अलग–अलग साईज की जोत नजर आती है, इसका रूहानियत के साथ क्या संबंध है?*

बाबा जी :– हमें पूर्ण सन्त के सिवाय आम आदमी के आस–पास कभी भी जोत दिखाई नहीं देती। हम पूर्ण सन्त के आस–पास जोत तभी देख सकते हैं जब सतसंग में बैठे हुए हमारा ख्याल पूरी तरह टिक जाता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जाँकी होय भावना जैसी, हरि मूरत देखी तिन तैसी।

जब हम सब तरफ से ख्याल हटाकर पवित्र ख्याल रखकर सतसंग में बैठ जाते हैं तब हमें कई बार उस जोत में से रश्मिें निकलती नजर आती हैं और कई बार पूरी जोत भी नजर आ जाती हैं। कई बार हमें ऐसा तजुर्बा अपने गुरु महाराज कृपाल के समय में हुआ करता था।

एक प्रेमी :– *महाराज जी! जब हम आपके आश्रम में आते हैं आपके प्यार की रेडियेशन से जुड़े होते हैं तब हमारे दिन बहुत खूबसूरती से निकल जाते हैं। जब उस प्यार की रेडियेशन कट जाती है तो उसे दोबारा जोड़ने का क्या तरीका है, वह रेडियेशन क्यों कट जाती है?*

बाबा जी :– संगत की रंगत होना स्वाभाविक ही है इसलिए सन्तों ने अच्छी संगत पर जोर दिया है। यहाँ आप मेरे संपर्क में

हैं जब आप अपने देश वापिस जाते हैं मैं तो उसी तरह आपके संपर्क में रहता हूँ जैसे यहाँ हूँ लेकिन आप अपने देश में जाकर घरों और दुनिया के कारोबार में लग जाते हैं मुझे मामूली सा ही याद करते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु सबको चाहे गुरु को चाहे न कोय।

उस समय के हाकिम जहाँगीर ने लाहौर में अपने वजीर चंदू सवाई को हुक्म दिया कि गुरु अर्जुनदेव जी को बहुत सख्त सजा दी जाए। गुरु अर्जुनदेव जी को हर तरह के शारीरिक कष्ट दिए गए। आपको गर्म तवे पर बिठाया गया, आपके सिर में गर्म रेत डलवाई गई, उबलती हुई देग में बिठाया गया। यह सब कुछ धर्म की आड़ में किया गया क्योंकि सामाजिक लोगों के दिल में घृणा होती है।

सन्त संसार में प्यार लेकर आते हैं। उस समय गुरु अर्जुनदेव जी के शिष्यों के साथ जो बीत रही थी उसे वही जानते थे कि पता नहीं! हमारे गुरुदेव के साथ क्या हो रहा है? आश्रमों में और उनके आस–पास रहने वाले बहुत से शिष्य इस किस्म के भी होते हैं जो गुरु के दर्शन किए बिना खाना नहीं खाते, जिनकी ऐसी धारणा होती है उनके लिए काफी मुश्किल हो जाता है।

अमृतसर और लाहौर का तीस मील का फासला था। प्रेमी शिष्य शाम को गुरु अर्जुनदेव जी के मकान के आस–पास शब्द कीर्तन बोलते और परिक्रमा करते थे। उन प्रेमियों की यह धारणा थी कि जब हम इस तरह करते हैं तो गुरु साहब हमें दर्शन देते हैं। आज पाँच सौ साल बाद भी वह धारणा जारी है।

बहुत से प्रेमियों की श्रद्धा है क्योंकि जो रीति–रिवाज चल पड़े वह रूकता नहीं और बढ़ जाता है।

पहले जो पूर्ण सन्त हो चुके हैं जैसे गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, हम उस ताकत को अपने गुरुओं से अलग नहीं समझते। हम सोचते हैं कि वही ताकत चोला बदलकर आ गई है। महाराज सावन सिंह जी की एक नामलेवा बूढ़ी माता एक दिन उसी शब्द–चौंकी में चली गई। बूढ़ी ने कहा कि जब आप गुरु अर्जुनदेव जी के चोले में थे तो प्रेमियों को दर्शन देते थे। आज मैं आपके दर्शन करने के लिए आई हूँ आप मुझे दर्शन दें।

महाराज सावन सिंह जी ने उस बूढ़ी माता को दर्शन दिए और प्रशाद दिया। बूढ़ी माता के दिल में ख्याल आया कि मैं घर जाकर अपने बच्चों को ले आऊँ कि महाराज जी अमृतसर आए हैं मेरे बच्चे भी महाराज जी से प्रशाद ले लें। जब वह अपने बच्चों को लेकर आई तब महाराज जी वहाँ मौजूद नहीं थे। वह आपके आश्रम ब्यास गई। महाराज जी वहाँ सतसंग कर रहे थे। बूढ़ी माता ने महाराज सावन सिंह जी से कहा, ''तू ठग है। तूने मेरे साथ ठग्गी मारी है। तूने मुझे दर्शन दिए जब मैं बच्चों को लेकर आई तो तू वहाँ पर नहीं था।''

सन्त मान–बड़ाई के भूखे नहीं होते। महाराज जी ने कहा, ''सतसंग में मेरे इतने गवाह हैं तू इनसे पूछ ले मैं काफी देर से यहाँ सतसंग कर रहा हूँ। मैं अमृतसर गया ही नहीं तुझे गलती लगी है मैंने तेरे साथ कोई ठग्गी नहीं मारी।'' बूढ़ी माता ने कहा, ''मुझे इनकी गवाही की क्या जरूरत है? मैंने आपको प्रत्यक्ष देखा है मेरे पास प्रशाद है।'' महाराज जी ने हँसकर कहा, ''जब

तेरा ख्याल मुझमें था तो मैं तेरे पास रहा, जब तू बच्चों में चली गई तो मैं अपनी संगत में आ गया।'' सन्त–सतगुरु तो हमारे पास ही रहते हैं लेकिन हम दुनिया में मस्त हो जाते हैं।

गुरु की महिमा बयान नहीं की जा सकती, गुरु की दया ग्रंथों में नहीं लिखी जा सकती; यह प्रेमी और गुरु के बीच का मामला है। रात का वक्त हो बाहर तूफान चल रहा हो बारिश हो रही हो मकान चारों तरफ से बंद हो और बाहर निकलना मुश्किल हो अगर आपके अंदर गुरु की सच्ची याद, सच्ची तड़फ है तो आपका गुरु जरूर आपके पास होगा। वह आपकी हर बात को सुनेगा वहाँ खुद प्रकट होगा।

***एक प्रेमी*:–** *मैंने सतसंग में सुना है कि काल को यह हक है कि वह गुरु से उसकी बाँह, आँख या उसके शरीर का कोई भी अंग माँग सकता है। क्या यह सेवकों की गलती या बुरे कर्मों की वजह से होता है?*

***बाबा जी*:–** महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि काल किसी भी सतसंगी का तिल जितना भी कर्म नहीं छोड़ता। काल पूरा हिसाब–किताब लेता है वह हिसाब गुरु दे चाहे सेवक दे। आप सेवक की हालत जानते हैं अगर सेवक को मामूली सा बुखार हो जाता है तो वह सारी–सारी रात गुरु के आगे अरदासें करता है और प्रेमियों से भी कहता है, ''भ्रावो! आप गुरु के आगे प्रार्थना करें कि मेरा बुखार दूर हो जाए।'' आप जिस गुरु के आगे प्रार्थना करते हैं वह जरूर आपका मुनासिब कर्म उठाता है। गुरु हर कर्म और हर बिमारी से अलग होता है क्योंकि वह

हिसाब–किताब देने के लिए नहीं आया, वह तो बख्शने के लिए आया है। काल को यह हक है कि उस प्रेमी की बिमारी या कर्म के पीछे गुरु से जो चाहे माँगे।

आपको पता है कि जब कर्जदार साहूकार का पैसा वापिस नहीं करता तो साहूकार की मर्जी है कि वह उसका मकान, पशु या घर में रखा कोई भी सामान माँग सकता है। कर्जदार साहूकार के आगे क्या बोलेगा? इसी तरह यह काल की मर्जी है कि वह सन्तों से जो भी माँगे सन्त खुशी–खुशी अपने सेवक का हिसाब अपने ऊपर ले लेते हैं।

प्यारे बच्चों! हजारों आदमी जब मिलते हैं और पत्रों में भी लिखते हैं कि मेरा, मेरे बच्चों का, मेरे पोते–पोतियों और दोहिते दोहितिओं का भी दुख दूर करें हाँलाकि उन्होंने नाम नहीं लिया होता और वे सतसंग में आकर भी खुश नहीं होते। हम उनसे इतना भार उठवाते हैं और कहते हैं कि भजन तो मैं करता नहीं आप दया करें।

हम सारा बोझ गुरु के ऊपर डालते हैं, वह शान्ति का पुंज चुप करके सह जाता है। आप काल के राज्य में आए है, काल के राज्य में कर्मों का कानून जटिल है जो करे सो भरे पूरा बदला लिया जाता है; उस कर्म का फल अवश्य भुगतवाया जाता है। काल के राज्य में माफी नहीं न्याय है, दयाल के राज्य में माफी है।

एक प्रेमी ने महाराज सावन सिंह के पास आकर कहा कि जन्मपत्री में आपकी उम्र सौ साल लिखी है। महाराज जी ने कहा, ''हाँ! अगर मुझे टिककर काम करने देंगे पत्रों में मेरे ऊपर बोझ

नहीं डालेंगे, दुख भरे पत्र नहीं लिखेंगे सिर्फ परमार्थ के ही पत्र लिखेंगे और मुझसे दुखों के ज्यादा कर्म नहीं उठवाएंगे तो हो सकता है कि मैं सौ साल ही रह जाऊं।'' लेकिन महाराज सावन सिंह जी नब्बे साल की उम्र में ही यह सांसारिक यात्रा पूरी करके चले गए। अभ्यासियों को पता है कि महाराज सावन दस साल पहले चले गए इसी तरह अभ्यासियों को पता है कि परमपिता कृपाल भी चौदह साल पहले ही चले गए।

हमारे गंगानगर में एक आम रिवाज सा बन गया था अगर कोई बीमार हैं तो सब मिलकर भजन पर बैठें और सारी संगत महाराज के आगे प्रार्थना करें। यह मैं कई दिनों तक देखता रहा। एक दिन मैंने कहा अफसोस की बात है कि भजन तो हमसे अपना ही नहीं होता। गुरु को बिना कहे ही बहुत कर्म उठाने पड़ते हैं। जब हम इतने आदमी मिलकर प्रार्थना करते हैं तो गुरु के ऊपर कितना बोझ डालते हैं जोकि बुरी बात है। कुछ लोगों को मेरी यह बात कड़वी लगी लेकिन जिन लोगों को गुरु से प्यार था उन्हें मेरी बात मीठी भी लगी।

एक बार महाराज कृपाल मेरे आश्रम आए। वहाँ एक मियाँ–बीवी आए उनके साथ एक छोटी सी लड़की थी। उस मियाँ–बीवी ने मुझसे कहा कि हमने महाराज जी से मिलना है इस लड़की पर महाराज जी की दृष्टि डलवानी है यह रात को रोती रहती है। मैंने उनसे कहा कि इसे कोई बीमारी होगी या यह भूखी रहती होगी क्या तुम इसे चुप नहीं करवा सकते? उन्होंने मेरी बात को कड़वा समझा कि मैं उन्हें महाराज जी से मिलने नहीं दे रहा। हम

गुरु से इस तरह के कर्म भी उठवाते हैं कि गुरु हमारे बच्चों को भी चुप करवाएं।

एक बार महाराज सावन सिंह जी बहुत ज्यादा बीमार हुए। एक प्रेमी ने आपसे पूछा, ''महाराज जी! यह आपका कर्म है या आपके किसी सेवक का कर्म है?'' वह कर्म उसी प्रेमी का था। महाराज जी ने कहा, ''सन्तों का अपना कोई कर्म नहीं होता।''

मैं बताया करता हूँ कि कई बार सन्त जिस सेवक का कर्म उठा रहे होते हैं वह अभाव ले आता है कि सन्तों की यह हालत! सतगुरु दयालु पुरुष होता है, रहम दिल होता है। जब आप अरदास नहीं करेंगे वह तब भी मुनासिब मदद करके ही खुश होता है। जिस तरह माँ अपने बच्चे को खाना खिलाकर खुश होती है उसी तरह सतगुरु भी हमारे मुँह में खाना डालकर फिर खुद खाकर ही खुश होता है।

एक प्रेमी:– *कुछ दिन पहले आपने ऐसे सेवकों की बात बताई थी जो अपने गुरु को छोड़कर किसी और गुरु के पास चले जाते हैं ऐसे सेवकों की मौत के समय क्या हालत होती है?*

बाबा जी:– सतगुरु जिसे नामदान देता है वह उसे जरूर धुरधाम पहुँचाता है, यह उसका बिरध होता है। आप जानते हैं जो दो बेड़ियों में पैर रखता है उसे तकलीफ तो आती ही है।

एक प्रेमी:– *क्या ईसा मसीह सच्चा गुरु है?*

बाबा जी:– हम सब सन्तों की इज्जत करते हैं, सबने सच का संदेश दिया है। हम आज भी अंदर जाकर उस ताकत को

देख सकते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमारा संबंध वक्त की ताकत और वक्त के मौजूदा गुरु के साथ होता है।''

हम जिन महात्माओं से मिले नहीं जिन्होंने हमें शब्द का भेद नहीं दिया हमारी जिम्मेवारी नहीं ली लेकिन जो आत्माएं उनके संपर्क में आई जिन्होंने उन महात्माओं से शब्द नाम का भेद लेकर उनकी आज्ञा का पालन किया उनके कहे मुताबिक अपना जीवन ढ़ाला हैं वे उन्हें अपना रूप बनाकर अपने साथ ले गए।

आज हम जिन महात्माओं से शब्द नाम का भेद लेकर उनकी आज्ञा का पालन करते हैं वे महात्मा हमें साथ लेकर उसी सच्चाई में समा जाएंगे। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

पिछले की तज टेक तेरे भले की कहूँ।
वक्त गुरु को खोज तेरे भले की कहूँ।।

महाराज सावन सिंह जी अपने सतसंगों में आम मिसाल दिया करते थे कि वक्त की चार चीजें काम देती हैं। वक्त का गुरु हमें शब्द–नाम का भेद दे सकता है। वक्त का डॉक्टर दवाई देकर हमारी सेहत ठीक कर सकता है। वक्त का पति औलाद पैदा कर सकता है और वक्त का टीचर हमें पढ़ा सकता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''लुकमान हकीम और धनवंतरी वैद्य आयुर्वेद के बहुत अच्छे माहिर हुए हैं। बेशक वे मुर्दे को जिन्दा कर सकते थे अगर आज हम बीमार हैं और हम यह कहें कि हमारा ईलाज लुकमान हकीम या धनवंतरी वैद्य ही करेंगे, उन्होंने अब आना नहीं, अब हमें वक्त के डॉक्टर के पास जाकर ही अपना ईलाज करवाना पड़ेगा।''

इसी तरह यहाँ राजस्थान में राजा गंगासिंह हुआ है जिसने आज से चालीस साल पहले शरीर छोड़ दिया था। उसने अपनी मेज पर तराजु रखा हुआ था। वह कहा करता था, ''मैं तोलकर न्याय करता हूँ और उसका यह भी ऐलान था कि करप्शन करने वाले को बेशक भगवान बख्श दे लेकिन मेरी कलम नहीं बख्शेगी।'' यह सच है कि जब उसके लड़के से गुनाह हुआ तो उसने अपने लड़के को भी माफ नहीं किया था। आज हम यह कहें कि गंगासिंह न्यायकार राजा था हम उससे अपना न्याय करवाएंगे; अब उसने हमारी मिसल नहीं देखनी हमारे मुकदमें का फैसला नहीं करना इसलिए आज हमें न्याय के लिए वक्त के मेजिस्ट्रेट के पास जाना पड़ेगा।

इसी तरह राजा विक्रमादित्य बहुत धर्मात्मा हुआ है। अगर आज कोई लड़की यह कहे कि मैं विक्रमादित्य धर्मात्मा राजा से मिलकर औलाद पैदा करुं उसने आकर औलाद पैदा नहीं करनी उस लड़की को वक्त के पति की जरूरत है।

इसी तरह जिस टीचर को संसार छोड़े हुए हजारों साल हो गए अगर हम कहें कि हमने अपने बच्चे को उस टीचर से ही पढ़वाना है तो उसने आकर हमारे बच्चे को विद्या नहीं देनी इसलिए हमें वक्त के टीचर की जरूरत है। हम सबकी इज्जत करते हैं लेकिन हमारा संबन्ध वक्त के गुरु के साथ है जिसने हमें शब्द–नाम का भेद दिया है हमारी जिम्मेवारी उठाई है।

महाराज सावन सिंह जी सतसंग में अपने जीवन की एक घटना बताया करते थे कि जब आप बाबा जयमल सिंह जी के

सतसंग में आते तो आपको अक्सर ब्यास स्टेशन पर एक पादरी मिलता जो आपसे यह पूछता, ''ईसा मसीह बड़े हैं, कबीर साहब बड़े हैं या बाबा जयमल सिंह जी बड़े हैं?'' महाराज सावन सिंह जी ने उससे कहा, ''तू ईसा मसीह और कबीर साहब को मेरे सामने खड़ा कर मैं तभी बता सकता हूँ।'' उसने कहा, ''यह तो मैं कर नहीं सकता।'' आपने कहा, ''मैंने तो बाबा जयमल सिंह जी को देखा है मैं उन्हें ही बड़ा कह सकता हूँ।''

मैं एक बार अपने नाना के घर गया। आमतौर पर वहाँ मेरे मामा मुझसे बहुत बहस किया करते थे। उन्होंने पूछा क्या तूने रब देखा है? मैंने कहा, ''हाँ! मैंने छह फुट लम्बा, चलता–फिरता रब देखा है, उसने मेरी जिम्मेवारी ली है।'' जब वे मुझे पागल कहते तो मैं कहा करता था:

कृपाल सिंह नू सिमर के पापी तरे अनेक।
कहे अजायब न छड्डिए कृपाल सिंह की टेक।।

एक प्रेमी:– *महाराज जी! ऐसा क्यों होता है कि जब कोई व्यक्ति नाम लेता है तो नाम लेने के थोड़े समय बाद ही उसे बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है?*

बाबा जी:– मुसलमानों की पवित्र किताब कुरान में भी यही सवाल आता है। मौहम्मद साहब से पूछा गया कि जब कोई जीव परमात्मा के रास्ते पर चलता है तो उसे बहुत मुश्किले आती हैं लेकिन जब कोई ऐब–पाप करता है तो उसे इतनी मुश्किले नहीं आती। हमारा मन ही हमारे अंदर ऐसी बातें पैदा करता रहता है।

मन का काम हमें भक्ति से दूर करना है। मौहम्मद साहब ने उन सेवकों को बहुत प्यार से जवाब दिया कि जब जीव नाम ले लेता है तब सतगुरु की पूरी कोशिश होती है कि मैं दोबारा इसे संसार में न भेजूँ। गुरु पिछले जन्मों के कुछ कर्मों को इसी जन्म में भुगतवाता है और कुछ कर्म अपने ऊपर ले लेता है। जीव के जन्मों–जन्मों के पाप कर्म इसी जन्म में भुगतवाने हैं तो उसको कुछ न कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा इसलिए भक्त को दुखी दिखाया गया है।

मनमुख इस तरफ आता ही नहीं। इंसान को हर गलती का मूल्य चुकाना पड़ता है। परमात्मा चाहता है कि मैं इसे फिर इंसान न बनाकर चौरासी लाख योनियों के चक्कर में डाल दूं। इसे पिछले जन्मों के सारे पुण्य इसी जन्म में दिखाए जाते हैं। जो लोग पाप ऐब करते हैं उनके पिछले पुण्य वह ताकत आगे लाती है जो कर्मों का भुगतान करती है लेकिन भक्त ने संसार में फिर हिसाब–किताब चुकाने नहीं आना इसलिए सतसंगी हँसते हुए दुखों को स्वीकार करते हैं।

मेरी जिंदगी का वाक्या है। मैं उस समय खूनी चक आश्रम में रह रहा था, मुझे बहुत तेज बुखार चढ़ा हुआ था। महाराज कृपाल ने अपने कुछ सेवक भेजे जिन्होंने यह बताया कि आप कल गंगानगर आ रहे हैं। उन प्रेमियों ने मुझसे कुछ नहीं पूछा मेरी हालत देखकर गंगानगर जाकर महाराज जी को तार दे दी। मेरा बुखार हट गया। गुरु सेवक का मुनासिब कर्म जरूर अपने ऊपर लेता है, उसकी मदद करता है।

उद्धो भगवान कृष्ण का भक्त था। उद्धो ने भगवान कृष्ण से सवाल किया कि जिस पर प्रभु दयाल होता है उसे क्या देता है? भगवान कृष्ण ने कहा, ''जिस पर प्रभु दयाल होता है उसे बीमारी, बेरोजगारी या निरादरी दे देता है।'' मैं जब पंजाब की अपनी जायदाद छोड़कर राजस्थान में आया, उस समय यहाँ पर पानी वगैरहा नहीं था; मैंने खूनी चक में मुरब्बे खरीदे। रिश्तेदारी में मेरा एक भाई मुझसे मिलने के लिए आया। मेरे सेवादारों ने उसे जमीन दिखाई कि इसे खुशी होगी सन्त ने जमीन खरीदी है लेकिन सारा दिन उसने न अच्छा कहा न बुरा कहा। आखिर सेवादारों ने मेरे पास आकर गिड़गिड़ाहट के लफ्ज़ कहे कि आपके इस भाई ने एक लफ्ज़ भी अच्छा नहीं कहा। मैंने हँसकर कहा, ''मैंने अच्छा किया ही नहीं जो यह अच्छा कहता।''

मैं पंजाब में अपनी अच्छी जायदाद छोड़कर राजस्थान के टिब्बों में आया हूँ। जब खूनी चक इलाके में नहरें आई, अच्छा मकान बनाया अच्छी जिंदगी व्यतीत करने लगा तब परमपिता कृपाल के साथ मिलाप हुआ। परमात्मा कृपाल ने कहा, ''मेरे खड़े–खड़े ही यह जायदाद और घर को छोड़ दे। जानवर लोगों की लड़कियों को बाँट दे और 16 पी.एस. जाकर भजन–अभ्यास कर।'' इसी कारण मेरे परिवार के लोग मुझसे नाराज हुए कि इसका दिमाग ठीक नहीं। कृपाल सिंह ने इसके ऊपर जादू किया है नहीं तो यह इतना अच्छा घर क्यों छोड़ता।

सच्चे आशिक लोगों के ताने–मेहणों और दुखों की परवाह नहीं करते। जिस तरह बत्ती दीपक के अंदर अपना सिर कटवाकर

ज्यादा रोशनी करती है इसी तरह सच्चे प्रेमी जैसे–जैसे दुखों मुसीबतों का सामना करते हैं वे मन को समझाते हैं कि ये तेरे बुरे कर्मों का नतीजा है। तेरा दुख कम हो रहा है, नाम जप। सच्चे प्रेमी कभी भी अपने भरोसे में कमी नहीं आने देते। गुरु जरूर मुनासिब मदद करता है, सूली की सूल बनाता है।

जब महाराज सावन सिंह जी आर्मी में घोड़े से गिर गए आपकी टाँग टूट गई बहुत कष्ट हुआ। बाबा जयमल सिंह जी ने बीबी रूक्को को बताया कि सावन सिंह पर बहुत भारी कष्ट आने वाला था, उन्होंने पाँच साल कष्ट भोगना था लेकिन स्वामी जी दया करके वह कष्ट पाँच महीने में ही कटवा देंगे। गुरु कितनी दया और बख्शिश करता है लेकिन हम फिर भी नाशुक्रे होते हैं किसी सख्त समय में भरोसा तोड़ लेते हैं।

हमने सन्तमत में इस तरह कदम नहीं रखा होता कि हमें सुख ही सुख मिलें या दुख ही दुख मिलें। सन्त हमें सुखों–दुखों से ऊपर उठने का तरीका बताते हैं, हमें वापिस अपने घर सच्चखंड जाने के लिए प्रेरित करते हैं। वहाँ सुख–दुख नहीं मौत–पैदाईश नहीं वह शान्ति का देश है। सन्त हमें स्वर्गों का लालच नहीं देते, नर्कों का डर नहीं दिखाते। कबीर साहब कहते हैं:

क्या नर्क क्या स्वर्ग संतन दोऊ रादे।
हम काहूँ की कान न कडदे अपने गुर परसादे।।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक अनमोल संदेश

दलदल

राजा भोज की सभा में एक तृष्णालु पुरुष आया। उसने पूछा, ''वह कौन सी **दलदल** है जिसमें फँसकर इंसान बाहर नहीं निकलता?'' राजा भोज संस्कृत का पंडित था। उसके दरबार में बहुत विद्वान थे। उसने सबसे पूछा लेकिन सबकी राय अलग-अलग थी। राजा भोज की नजर में जो सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा पंडित था, उसे आठ दिन की मोहलत दी गई कि अगर तूने सही जवाब नहीं दिया तो तुझे नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाएगा।

वह पंडित जंगल में चला गया। वहाँ उसे एक सतसंगी मिला। सतसंगी ने पंडित से पूछा, ''पंडित जी! आप इतने परेशान क्यों हैं?'' पंडित ने अपनी सारी व्यथा सुनाई और कहा, ''राजा ने मुझसे सवाल किया है कि वह कौन सी **दलदल** है जिसमें फँसकर इंसान बाहर नहीं निकलता?''

सतसंगी समझदार था, सतसंगी ने कहा, ''मैं तेरी बात का जवाब दूँगा। मेरे पास एक पारस है, जिसमें यह गुण है अगर इसे लोहे से लगा दें तो लोहा सोना बन जाता है। मैंने शादी नहीं करवाई मेरा कोई बच्चा-बाला भी नहीं। मैं तुझे यह पारस दे दूँगा। तुझे राजा के यहाँ नौकरी करने की कोई जरूरत नहीं है, तेरे बच्चे आराम से खाएंगे। अगर किसी से कोई गुण लेना हो तो उसका शिष्य बनना पड़ता है; तू मेरा शिष्य बन जा।''

पंडित बहुत खुश हुआ और सतसंगी की बात मानने के लिए तैयार हो गया। तब सतसंगी ने कहा, ''मैं तुझे अपना शिष्य तभी बनाऊँगा जब तू मेरी भेड़ का दूध पिएगा।'' पंडित ने कहा, ''मैं तो

पंडित हूँ, मैं भेड़ का दूध कैसे पी सकता हूँ?'' सतसंगी ने कहा, ''मैं तुझे पारस नहीं दूँगा।''

पंडित ने सोचा कि पारस में बहुत गुण हैं, यह पारस सोना बनाता है। पाप हो जाएगा तो क्या? मैं प्रायश्चित कर लूँगा। पंडित ने सतसंगी से कहा, ''मैं दूध पी लेता हूँ तू मुझे पारस दे देना।''

सतसंगी ने कहा, ''अब वह मौका निकल गया। अब तुझे पारस तभी मिल सकता है कि पहले दूध मैं पिऊंगा फिर उस दूध को कुत्ता पिएगा तब तुम वह दूध पीना।'' पंडित ने कहा, ''नहीं।'' फिर पंडित के दिल में ख्याल आया कि प्रायश्चित तो करना ही है मैं दोनों प्रायश्चित इकट्ठे ही कर लूँगा। पंडित ने सतसंगी से कहा, ''मैं तैयार हूँ।''

सतसंगी ने कहा, ''अब वह मौका भी निकल गया अगर तुझे पारस लेना है तो मैं तुझे कुत्ते का जूठा दूध जिसमें मेंगने पड़ी होंगी इंसान की खोपड़ी में डालकर दूँगा। तू वह दूध पिएगा?'' पंडित ने सतसंगी से पूछा, ''तू मुझे पारस देगा?'' सतसंगी ने कहा, ''हाँ।''

जब पंडित को खोपड़ी में दूध डालकर पीने के लिए दिया और वह दूध पीने लगा तब सतसंगी ने कहा, ''दूध पीने से पहले मेरा जवाब सुन। वह जवाब यह है कि यही वह **दलदल** है जिसमें फँसा हुआ इंसान सारी जिंदगी निकल नहीं सकता। पैसे के लोभ में फँसा हुआ इंसान हर तरह की चोरी, ठग्गी, बेईमानी करता है।'' पंडित खामोश हो गया। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

जिसको कछु न चाहिए सोई शहन्शाह।

***

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में 19, 20 व 21 मई 2017 को सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी सतसंगी भाई–बहनों से अनुरोध है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर परम सन्तों के सतसंग से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हॉल,

भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार(नज़दीक पीरागढ़ी चौंक)

नई दिल्ली – 110087